पो० रजि० नं० UA/NTL/03/2012-2014

ISSN 0970-5198

किसान भारती

सस्य श्यामला भारत के लिए

प्रति कापी : रु. 10 जनवरी, 2014 वार्षिक शुल्क : रु. 100

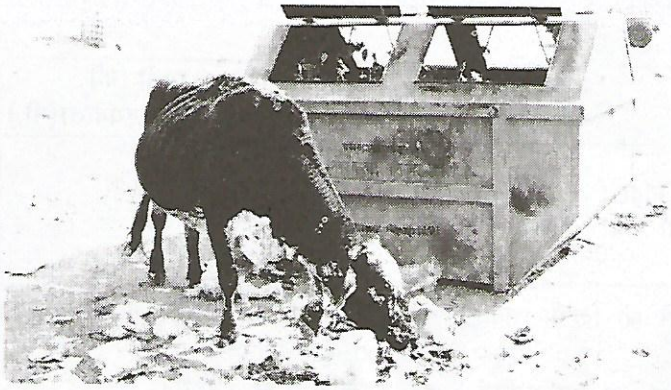

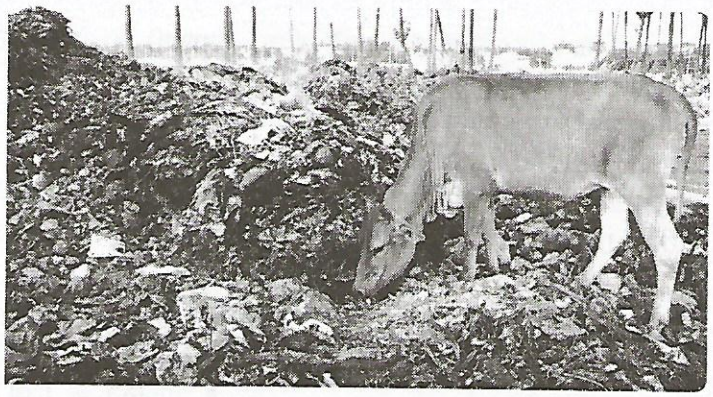

दुधारू पशुओं के लिए घातक बनता प्लास्टिक प्रदूषण

प्रणय अग्रवाल★

हमें यह समझना होगा कि पशु को पॉलिथीन सेवन से रोकना ही इस समस्या का सबसे अच्छा उपाय है। पेट में मौजूद पॉलिथीन का पता लगाना ज्यादातर आसान एवं संभव नहीं होता। ऑपरेशन द्वारा पेट से निकालना ही इसका एकमात्र इलाज है। अन्य बीमारियों की तरह इसे दवाई या सुई आदि द्वारा उपचारित नहीं किया जा सकता। अतः इस समस्या को कम करने के लिए आज मनुष्य को प्लास्टिक के प्रयाग पर आत्ममंथन करना ही होगा। तभी हम अपने पशुओं को इस जहर से बचाने में कामयाब हो सकते हैं-

आज जिस युग में हम रह रहे हैं उसे अगर प्लास्टिक युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति ना होगा। प्लास्टिक के दुरूपयोग ने आज पशुओं की एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या को उत्पन्न कर दिया है। ये प्लास्टिक/पॉलिथीन हमारे दुधारू पशुओं के पेट में फंसकर उनके स्वास्थ्य को हानि पहुँचा रही है। प्लास्टिक खा लेने के बाद वह पशु के पेट में जमा हो जाता है। पेट में मौजूद प्लास्टिक धीरे–धीरे जमा होकर एक गेंद या रस्से का रुप ले लेती है। पशु की पाचन क्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है। पशु को कमजोरी आ जाती है और उसका दुग्ध उत्पादन भी निरंतर गिरता जाता है। इस समस्या से बचने के लिए आज मनुष्य को प्लास्टिक के प्रयोग पर आत्ममंथन करना होगा।

विज्ञान के नित नए आविष्कारों ने आज मानो हमारी दुनिया हीं बदल दी है। इन सभी आविष्कारों में 'प्लास्टिक' संभवतः विज्ञान का एक वो उपहार है जो मनुष्य जीवन का पर्याप्त सा बन गया है। अगर हम गौर से विचार करें तो आज जिस युग में हम रह रहे हैं, उसे अगर प्लास्टिक युग कहा जाए तो अतिश्योक्ति ना होगी। आज घर–घर में, ऑफिस, दुकानों, कारखानों, विद्यालयों, अस्पताल, वाहन, इत्यादि में प्लास्टिक एवं उससे बने सामान का उपयोग प्रचुर मात्रा में हो रहा है। यह उपयोग दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। प्लास्टिक के बिना तो आज जीवन अकल्पनीय सा महसूस होता है। यह सब प्लास्टिक की कुछ खूबियों के कारण हो रहा है। अन्य धातुओं की अपेक्षा यह सस्ता, टिकाऊ, जंक रहित एवं रखरखाव आसान है। इन तथ्यों के चलते, प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग (या कहें कि दुरूपयोग) ने आज पशुओं में एक ज्वलंत, सोचनीय एवं गंभीर स्वास्थ्य समस्या को उत्पन्न कर दी है। ये प्लास्टिक हमारे दुधारू पशुओं के पेट में फंसकर उनके स्वास्थ्य को हानि पहुँचा रही हैं।

आज प्लास्टिक से बना विभिन्न प्रकार के सामान, खिलौने, पुर्जे, पाइप, लिफाफे इत्यादि कूड़े–करकट, नाली में पड़े रहते हैं। हल्के होने के कारण ये दूरदराज के खेत खलिहानों, चारागाहों में भी पहुँच जाते हैं। प्लास्टिक का सबसे बड़ा अवगुण यह है कि वह पर्यावरण में जल्दी गल नहीं पाता। इसको गलकर समायोजित होने में तीन सौ से पाँच सौ वर्ष तक का समय लग सकता है। अतः खाद बनाते समय प्लास्टिक का कूड़ा गल नहीं पाता एवं जब ऐसी खाद खेतों में डाली जाती है तो उसमें मौजूद प्लास्टिक पूरे खेत में फैल जाता है। प्रायः ऐसा भी देखा जाता है कि कतिपय महिलाएं घर का कूड़ा, बचा हुआ खाना, सब्जियों के पत्ते, डंठल आदी सामग्री एक पॉलिथीन के लिफाफे में बांधकर कूड़ेदान या सड़क के किनारे फेंक देती हैं। पर्यटक स्थलों में अकसर पर्यटकगण 'एक बार इस्तेमाल करो और फेंको' (यूज एण्ड थ्रो) पद्धति के तहत व्यवहार करते हैं। अतः इनके द्वारा अपना कूड़ा,

★वरिष्ठ पशुचिकित्साधिकारी, यू.एल.डी.बी. सीमैन बैंक (कुमाऊँ मण्डल), पशुपालन विभाग, लालकुआँ, जिला– नैनीताल (उत्तराखण्ड)

यात्रा का बचा भोजन आदि के लिफाफे में बांधकर उन्हें आस–पास ही फेंक देते हैं। शादी–विवाह एवं अन्य समारोह आयोजनों में आजकल पॉलीथीन से बनी प्लेट, कटोरियाँ एवं गिलास का अत्यधिक प्रचलन हो गया है। रेलवे स्टेशन एवं बस अड्डे पर भी यही हाल है। इन सब उपभोक्ता द्वारा प्रयोग करने के बाद बचे हुए खाद्य सामग्री के साथ आस–पास ही फेंक दिया जाता है।

हमारे दुधारू पशुओं की भोजन पाचन क्रिया कुछ ऐसी होती है कि वो खाद्य सामग्री लेते समय उसमें फर्क नहीं कर पाते। गाय एवं भैंस पहले काफी सामग्री अपने पेट में भर लेते हैं और फिर जुगाली द्वारा उसे पचाते हैं।

ये पशु अखाद्य पदार्थ को खाद्य से छांटकर अलग करने में असमर्थ होते हैं। अतः खाने की सामग्री के साथ अगर कागज, कपड़ा, सुई, बटन इत्यादि मौजूद हों तो उसे भी ग्रहण कर लेते हैं। बाहर चरने के लिए जाने वाले पशुओं, स्वामी रहित पशुओं एवं शहरों में यह समस्या ज्यादा मात्रा में पाई जाती है। घर पर ही पाले गए पशु एवं बाड़े घर में ही हरा चारा इत्यादि उपलब्ध कराए गए पशुओं में ये समस्या अपेक्षाकृत कम होती है। इसका कारण है कि ऐसे पशुओं का ध्यान पशुपालक स्वयं रख रहा होता है और वह पशु के भोजन से पॉलीथीन वगैरह छांट कर हटा देता है।

प्लास्टिक/पॉलिथीन खा लेने के बाद वह पशु के पेट में जमा हो जाता है। स्वाद रहित, चिकना, लचिला होने के कारण प्लास्टिक सेवन के दौरान पशु को अजीब नहीं लगता और वो उसे आसानी से अन्य सामग्री के साथ निगल लेता है। लंबे समय के सेवन से पशु के पेट में प्लास्टिक धीरे–धीरे जमा होती रहती है। पशुचिकित्सकों द्वारा ऑपरेशन करने पर ऐसे कुछ पशुओं के पेट से पाँच कि.ग्रा. तक प्लास्टिक पॉलिथीन पायी गई है।

पेट में मौजूद प्लास्टिक धीरे–धीरे जमा होकर एक गेंद या रस्से का रूप ले लेती है। खाए हुए पॉलिथीन लिफाफे इत्यादि में भोजन फंसने लगता है। समय बीतने पर ये ज्यादा

✻✻✻ खाद बनाते समय प्लास्टिक का कूड़ा गल नहीं पाता। जब ऐसी खाद खेतों में डाली जाती है तो उसमें मौजूद प्लास्टिक पूरे खेत में फैल जाता है। कई बार ऐसा भी देखने में आता है कि कतिपय महिलाएं घर का कूड़ा, बचा हुआ खाना, सब्जियों के पत्ते, डंठल आदि सामग्री एक पॉलिथीन के लिफाफे में बांधकर कूड़ेदान या सड़क के किनारे फेंक देती हैं, हमें ऐसा करने से बचना चाहिए। ✻✻✻

भर जाते हैं। और पेट की जगह को कम कर देते हैं। इससे पशु की पाचन क्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है। पशु को पाचन संबंधी रोग जैसे भूख ना लगना, दस्त, गैस इत्यादि घेर लेते हैं और उसका स्वास्थ्य खराब होने लगता है। इलाज के लिए बुलाए गए पशुचिकित्सक को इस तथ्य की जानकारी नहीं हो पाती की पीड़ित पशु के पेट में पॉलिथीन मौजूद है। अतः उपरोक्त के इलाज के प्रयास बेकार जाते हैं एवं कोई सुधार नहीं हो पाता। पशु को कमजोरी आ जाती है और उसका दुग्ध उत्पादन भी निरंतर गिरता जाता है। इसके अलावा प्लास्टिक से एक और नुकसान भी होता है। अधिकतर प्लास्टिक एवं पॉलिथीन की गुणवत्ता निम्न स्तर की होती है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानकों से निम्न स्तर के गुणवत्ता वाले प्लास्टिक विषैले रसायन छोड़ते हैं। ऐसे प्लास्टिक का सेवन करने पर, ये रसायन पशु के रक्त में समाहित हो जाते हैं जिससे पशु में विषाक्तता हो सकती है।

हमें यह समझना होगा कि पशु के द्वारा पॉलिथीन सेवन को रोक पाना ही इस समस्या का सबसे अच्छा उपाय है। पेट में मौजूद पॉलिथीन का पता लगाना ज्यादातर आसान एवं संभव नहीं होता। ऑपरेशन द्वारा पेट से निकालना ही इसका एकमात्र इलाज है। अन्य बीमारियों की तरह इसे कोई दवाई, सुई, घोल, गोली, चूरण आदि द्वारा उपचार करना संभव नहीं है। अतः इस समस्या का प्रकोप कम करने के लिए आज मनुष्य को प्लास्टिक/पॉलिथीन प्रयोग पर आत्ममंथन करना होगा।

जनमानस द्वारा निम्न बिंदुओं पर विचार एवं यथासंभव अनुपालन से स्थिति में काफी सुधार की उम्मीद संभव हैः

- पॉलीथीन के लफाफे, कैरी बैग, इत्यादि का प्रयोग कम से कम किया जाए। यह किसी कानूनी प्रतिबंध या मनाही के बजाए जनमानस स्वेच्छा से हो तो अधिक प्रभावी हो सकता है।
- गृहणियों द्वारा घर के कूड़ें, सब्जी, बचा भोजन इत्यादि को सही तरीके से फेंका जाए। ऐसे कूड़े को पॉलीथीन की थैली में बाँधकर कदापि ना फेंका जाए।
- घर के सभी सदस्यों द्वारा प्लास्टिक एवं अन्य ना सड़ने गलने वाला कूड़ा को अलग से फेंका जाए। ऐसे कूड़े को खाद के गड्ढे ना फेंका जाए।
- क्षेत्र की नगरपालिका परिषद द्वारा प्लास्टिक एवं अन्य ऐसे कूड़े के लिए यथासंभव स्थान चिंहित किए जाए एवं उसको समय समय पर उठाने की समुचित व्यवस्था की जाए। ये पर्यटन क्षेत्रों में काफी लाभकारी हो सकता है।
- पर्यटन पर जाने वाले व्यक्ति उस क्षेत्र की पर्यावरण सुरक्षा एवं सुन्दरता का थोड़ा ध्यान रखें। चिप्स, पॉपकार्न, ब्रिस्कुट, टॉफी इत्यादि के पैकेट इधर–उधर ना फेंके। यात्रा का बचा भोजन इत्यादि ऐसे ही फेंक दे, पालीथीन में बांधकर नहीं।
- यथासंभव पशुपालक अपने पशुओं को ऐसे स्थानों के आस–पास ना चरने दें जहां प्लास्टिक कूड़े की बहुतायत हो।

पशुओं में पालीथिन प्रकोप को रोकने के लिए आज ये जरुरी हो गया है कि हम इस समस्या पर विचार करें एवं स्वेच्छा से इसे रोकने के लिए प्रयास करें। इस प्रकार हम अपने पशुधन के स्वास्थ्य की रक्षा भी कर पाएंगे और उनसे अधिक दुग्ध उत्पादन प्राप्त कर राष्ट्र निर्माण में भी सहयोग देंगे। ❑